International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 15-09-2020; Accepted: 30-09-2020; Published: 16-10-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 109-111

काषी के अस्सी में आँचलिकता

संजय प्रसाद
म.वि. बंधौली, जाले, दरभंगा, बिहार, भारत

सारांश
भूमंडलीकरण और बाजार वाद की राजनीति ने देश में देर से दस्तक दी, बनारस में बाजारवाद का चेहरा बहुत पहले से मौजूद है। यह उपन्यास अपने इतिवृति और व्यंग्यार्थ की बदौलत इक्कीसवीं सदी के मुहाने पर दस्तक देती बीसवीं सदी के आखिरी दो दशकों का महा आख्यान उपस्थित करता है। इसके कथ्य एवं शिल्प की खूबियों एवं खामियों को सरल समीक्षा पद्धति के जरिए नहीं समझा जा सकता। काषी की महाष्मशान स्थल माना जाता है जिसका राजा डोम था। ऐसा बलशाली की राजा हरिष्चन्द्र की भी उन्होंने अपना नौकर रखा था। काषी धर्म और मोक्ष का स्थल भी मानी जाती है। इनकी महानता को देखने और सुनने के लिए हजारों के तादाद में विदेशी बनारस आते है।

मूल शब्दः भूमंडलीकरण, राजनीति, बाजार, काषी

प्रस्तावना
साहित्य का संबंध स–हित से जुड़े होने के कारण सर्वकालीन और सर्वजनीन होता है। अपने उत्पति काल से मानव समाज के सभी आयामों में उपन्यास सर्वाधिक और यथार्थ विद्या के रूप में चित्रित है। मनुष्य के वारूतविक जीवन की कथा उपन्यास कहलाता है।

भारतीय वाङगमय खासकर 'ऋग्वेद' में उपन्यास की व्यापकता और महता देखते हुए इन्हें तीन काल खण्डों में बांटा है– प्रेमचंद पूर्व प्रेमचंद युगीन और प्रेम चन्दोत्तर युग। प्रेमचंद पूर्व का उपन्यास मूलतह, मनोरंजन मात्र ही था। लाला श्री निवास दास का परीक्षा गुरू श्रद्धाराम फूलौरी का वृयित्र भागवति, ठाकूर जग मोहन सिंह का 'यामा स्वप्न', अयोध्या सिंह उपाध्याय का 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' तथा देवकीनन्दन खत्री का चंद्रकांता तथा चन्द्रकांता संतति मुख्य हैं।

वास्तव में उपन्यास की व्यापकता प्रेमचन्द के आगमन से मिली है। मानव को उपन्यास के निकट लाने का श्रेय प्रेमचन्द को है। उन्होंने उपन्यासों द्वारा किसानों की आर्थिक व्यवस्था, ग्रामीण जीवन की दुर्बलतात्र विद्याओं तथा वैष्याओं की समाज की कुरितियां हिन्दु–मुस्लिम एकता, जमींदारों की उपन्यासकार आदि तत्कालीन सभी प्रष्नों पर प्रकाष डालने का काम किया। 'सेवासदन' में नारी जीवन में घटनेवानी घटना रूढ़िवादिता को उजागर किया है तो रंगभूमि और 'कर्मभूमि' में सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं पर प्रकाष डाला है। अमरकृति 'गोदान में वर्ग वैमष्य का चित्रण प्रस्फूरित हुई है। नयक छोरी भारत के दीन–हीन कृषक वर्ग का प्रतिनीधि है जिसका चित्रण प्रेमचन्द ने अपने हृदय के रक्त से किया है।

प्रेमचन्द के समकालीन जयशंकर प्रसाद ने 'कंकाल' के माध्यम से भारतीय स्त्रियों की असहाय परिस्थितियों का चित्रण करके मंदिरों के ढ़ोगों पर प्रकाश डाला है, वहीं तितली में ग्राम सुधार की भावना को रूपायित करने का काम किया है।

प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास विभिन्न को लेकर लिखे गये सामाजिक, समाजवादी, ऐतिहासिक, मनोविष्लेषणवादी, मनोवादी आंचलिक आदि।

सामाजिक उपन्यास समाजमंगल की भावना से अउप्राणित है। जिसमें आधारभूत विचार धारा, व्यक्ति चिंतन से संबंधित नहीं होता। इस श्रेणी के उपन्यासों में सियाराम शरण उस विश्वम्भर नाथ कौषिक, अमृत लाल नागर एवं फणीष्वरनाथ रेणु मुख है।

विष्वम्भरनाथ कौषिक ने अपने उपन्यास माँ में पथ भ्रष्ट पात्रों को सही रास्तों पर लानें का प्रयास है। 'महाकाल' अमृतलाल नागर ने बंगाल के दुर्भिक्ष की पृष्ट भूमि पर व्यक्तिगत स्वार्थ एवं समाजिक कल्याण के द्वंद का समस्या का चित्रण एवं समाधान किया है। मैला आँचल एवं 'परती परिकथा' में ग्रामीण अंचल की आत्मा में होने बाले आलोख विक्षोभ झाँकी को प्रस्तुत किया गया है। व्यक्तिवादी उपन्यासकारों में नन्ददुलोर बाजपेयी, उपेन्द्रनाथ अष्क, रामेष्वर शुक्ल अंचल आदि मुख्य माने जाते हैं। अष्क के उपन्यासों में नायकों तथा नायिकाओं के जीवन की समस्याओं के जगह व्यक्ति के संघर्ष की समस्या को चित्रित किया है। रामेष्वर शुक्ल आँचल ने 'चढ़ती धूप की ममता' 'नयी इमारत की आरती' के चरित्रों में व्यक्तिगत सुख–दुःख, आषा–आंकांक्षा की झाँकी प्रस्तुत की है।

मनोवादी उपन्यासों में व्यक्तिगत कुंठाओं का विषलेषण किया गया है। ''त्यागपत्र' एक नारी के करुण जीवन की कहानी है तो 'कल्याणी' में परिस्थिति बंधन में जकड़ी हुई आत्मा का कन्दन है। अज्ञेय के शेखर एक जीवनी में शेखर को एक विध्वनषील नामक रूप में चित्रित किया गया है।

साहित्य का संबंध स–हित से जुड़ा होने के कारण सर्वकालीन और सर्वजनीन होता है। साहित्य के व्यापक आयामों में उपन्यास सर्वाधिक और यथार्थ विधा के रूप में चिन्हित एवं चित्रित होता है।

भारतीय वाड्गमय ऋग्वेद में उपन्यास का आदि बीज सुरक्षित है। वृहत कथा 'पंचतंत्र' 'जातक' कथा साहित्य 'हितोपदेश' 'कादम्बरी' 'तिलकमंजरी' 'पृथ्वीराज रासो' आदि आख्यान ग्रंथ हिन्दी उपन्यास की पृष्ठभूमि मानी जाती है।

वही आधुनिक उपन्यासकार में ''प्रेमचन्द'' ने भी अपने उपन्यास में भी सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं पर प्रकाश डाला है।

'बूंद एवं समुद्र' में नवजागरण की बात कही गयी है। 'मैला आँचल' के रचनाकार फणीश्वरनाथ रेणु ने 'मैला आँचल' एवं 'परती परिकथा' में ग्रामीण अंचल की आत्मा में होनें वाले आलोर और विक्षोभ को झाँकी प्रस्तुत किया है।

अभिधेय उपन्यासकार काशीनाथ सिंह के उपन्यासों सभी युगों की प्रवृति कमोवेश रूप में दिखती है। उनके समस्त उपन्यास आँचलिक उपन्यास का दूसरा रूप अर्थात नागरिक अंचल से संबंध आँचलिक उपन्यास की श्रेणी में आते है।

काषीनाथ सिंह के उपन्यासों में एक उपन्यास है–'काषी का

अस्सी'। जिसमें काशी की गली में घटने वाली हर घटना का यथार्थ चित्र उजागर हुआ है– खराँऊ पहन कर पाँव लटकाए पान की दूकान पर बैठे तन्नी गुरु से एक आदमी बोला–किस दुनिया में हो गुरु! अमरिका रोज–रोज आदमी को चन्द्रमा पर भेज रहा है तुम घंटेक भर से पान घुला रहे हो,''

'खराँऊ' शब्द ग्रामीण परम्परा का द्योतक ही तो है। 'काषी का अस्सी' को 'मैला आँचल' की अगली कड़ी मानी जाती है। इस उपन्यास का मूल केन्द्र बिदुर 'अस्सी मुहल्ला' है। जहाँ का हर एक आदमी का सरनेम गुरु ही है।

'गुरु' यहाँ की नागरिकता का 'सरनेम' है।

न कोई सिंह, न पांडे, न जादो, न राम! सब गुरु! जो पैदा भया, वह भी गुरु, जो हो मरा, वह भी गुरु!

इसे भी उपन्यासकार ने पाँच भागों में बांटा है, जिसका नाम भी साधारण बोलचाल की भाषा में रखा है–(प) देख तमाषा लकड़ी का, (पप) संतों घर में झगरा भारी, (पपप) संतो असंतो और घोघावसन्तो का अस्सी (पअ) पाड़े कौन कुमति तौहें लागी (अ) कौन ठगवा नगरिया लूटल को

उपन्यासकार ने काषी मुहल्ले में उत्पन्न समस्याओं को आलेखित करने का काम किया है– एक थे हमारे बाप जान जो पैना उठाए हमें किताब–कापियों में जोते रखते थे–'सालों खेती हो गई सरकार के' उसमें। अगर यह भी नहीं करोगे तो भीख माँगोगे!

उनका एक जीवन दर्षन था–जो पठितत्यम् तो मरितत्यम् न पठितव्यम् तो मरितव्यम् फिर दाँत कटाकर क्यों करितव्यम्?'

उपन्यासकार ने 'अस्सी' में होने वाले पर्व–त्योहार में होने वाले साधारण जन के उपयोगी माँग को भी नहीं छोड़ा है खाते सब थे मगर पस्त! अस्सी की सारी दुकाने बन्द! ऐसे गाढ़े वक्त पर जबकि बड़े–बड़े नेता रण छोड़ चुके थे–गया सिंह ने माइक सँभाला–दहाड़ने से पहले उन्होंने मंच को तीन तरफ से घेरे पचासों सिपाहियों समेत दारोगा शर्मा को देखा– ''षर्माजी! देख रहे हो मेरा सिर? रणलवाट? खोपड़ी पर एक भी बाल नहीं। तुम्हारे डंडे का वार इस पर भरपूर पड़ेगा! मारो! मार सको तो! लेकिन शर्मा भोसड़ी के! तुम काषी की संस्कृति और परम्परा मिटाना चाहते हो? तुम्हारी हैसियत कि तुम हजारों–हजार साल से चली आ रही काषी की संस्कृति और परम्परा मिटा दो? तुम्हारे जैसे जाने कितने दरोगा–दरोगी आए और गए; अस्सी कायम है और कायम रहेगा।''

उपन्यासकार ने आफिस में नौकरी करने वाले बाबू के विषय में संजोने का काम किया है– ''सुकु कल हमें पिटवाते–पिटवाते बचा। साले पर अंग्रेज़ी से हाईस्कूल करने का भूत सवार है। तीन दिन से 'वाइफ' का माने याद कर रहा है! हर समय स्कूल पर बैठे–बैठे 'डब्लू आई एफ ई बाइफ बाइफ माने औरत बोलता रहता था। कल हुआ ऐसा की सामने से आती हुई एक लड़की को देखा। कहा–गुरु वाक्य में प्रयोग करें? मैनें ध्यान नही दिया–कहा अच्छा करो। वह बोला–ही इज वाइफ! महाराज निकाल लिया चप्पल उस लड़की ने! मैं तो साईकिल पर सवार होकर भागा, उसका क्या हुआ? अब चले तो पता चलेगा। अच्छा जैं श्री राम।''

उपन्यासकार ने लकड़ी जैसी आवष्यक एवं तुच्छ वस्तुओं पर भी अपनी नजर टिकाया है जिसे एक जोगी के द्वारा दिखाया है–सुनो सुनो ऐ दुनिय़ावालों–

यह जग बना है लकड़ी का
जीते लकड़ी मरते लकड़ी
देख तमाषा लकड़ी का।

ऐ दुनिया वालो! वह पालना लकड़ी है जिस पर बचपन में सोए थे! वह गुल्ली–डंडा भी लकड़ी है, जिससे खेले थे! वह पटरी भी लकड़ी है जिसे लेकर मदरसा गए थे! वह छड़ी भी लकड़ी है जिससे मुदर्रिस की मार खाई थी! ब्याह रचाया था! सुहाग की सेज भी लकड़ी है जिसे दुल्हन के साथ सोए थे ! और बुढ़ापे का सहारा लाठी भी तो लकड़ी ही है।

इस उपन्यास का दूसरा अध्याय है ''सन्तों घर में झगरा भारी'' जिसको पात्र का नामकरण भी उसी आधार से उपन्यासकार ने किया है–हरिद्वार जो एक तीर्थ स्थल है, तो रामवचन भगवान राम पर आधारित नाम है। ऐसे व्यक्ति का चित्रण कर उपन्यासकार ने राजनीति पर व्यंग्य करने से भी नहीं चूकते हैं–

''राजनीति बेरोजगारों के लिए रोजगार कार्यालय है, इम्प्लायमेंट ब्यूरो। सब आई.ए.एस.पी.सी.एस. हो नहीं सकता। ठेकेदारी के लिए भी धनबल–जनबल चाहिए, छोटी–मोटी नौकरी से गुजारा नहीं। खेती में कुछ रह नहीं गया है। नौजवान विचारा पढ़–लिखकर डिग्री लेकर कहाँ जाए? और चाहता है लम्बा हाथ मारना। सुनार की तरह खुट–खुट करनेवालों का हश्र देख चुका है, तो बच गई राजनीति। वह सत्ता की भी हो सकती है, विपक्ष की भी और उग्रवाद की भी। समझिए कि दादागिरी यहाँ भी है, उठा–पटक है चापलूसी है, हड़बोंगई है तरबली है, संघर्ष है लेकिन यह कहाँ नहीं है? पाना और खोना किस धन्धे में नहीं है?''

रामवचन टिकट का इंतजार कर ही रहे थे कि बोकारो से उनके भैया आये, बोले अस्सी के शब्दों में– ''जवान बिटिया को घर में छोड़कर भोसड़ी के बनारस भागे हुए हो? ठीक है। हम लड़का भी ढूँढ़ लेंगे, वियहवा भी कर देंगे लेकिन कुछ तुमहू करोगे?

''देखो विचार करो ठंडे दिमाग से, जब अपनी गाँड़ में खूँटा पड़ा हो तो कोसिश करनी चाहिए कि अपने में से निकालकर दूसरे में डाल दे। और दूसरे का मतलब होता है लड़कावाला। यह नहीं कि अपने में से निकालो और भाईयों के उसमें ठूंस दो।''

उपन्यासकार ने राजनीति में किस तरह जातिपाठ को समेटने का काम किया है– ''देखा डाक साहब? राजकिशोर मेरी ओर मुखातिब हुए–''यह है जाति का नया चेहरा। मुलायम जिसे टिकट दे, वह अहिर कांसी राम जिसे टिकट दे, वह चमार नीतीश कुमार जिसे टिकट दे वही कुर्मी, ठाकुर, बाभन, बनिया, लाला चाहे जो हो। कांसीराम का टिकट मिला नहीं कि चमार हुआ। बनारस से अवधेष राय लड़ रहे हैं बसपा से और हरिजन बस्तियों में जाकर देख लीजिए। अरे इसे छोड़िए, अपने यहाँ चन्दौली में ही देखिए। कांग्रेस में श्यामलाल यादव है और मुलायम की मुहर के साथ सपा से जायसवाल। अब यादव श्यामलाल नहीं रह गए, यादव है जवाहर लाल जायसवाल''

''खैर यह आपसी समस्या है। यह बताइए कि क्या होने जा रहा है इस चुनाव में?''

''देखिए साफ–साफ बताते है आपसे, ठाकुरों–बाभनों के वोट तो है नहीं इनमें नेता जरूर है लेकिन वोट नहीं हैं। वोट किनेक है तो यादवों के, चमारों के। लेकिन वे अपने बूते जिता नहीं सकते। जिता कौन सकता है तो बकिया जातियाँ–पाँच घर तेली, चार घर कहार तीन घर गड़रिया, दो घर पासी तीन घर धोबी, दो घर कुम्हार, तुहार नोनियाँ, धुनिया..... जितानेवाली जातियाँ यही हैं जो हर गाँव में हैं और जिन्हें कोई नहीं पूछता। वे जिधर जाएँगी, वही जीतेगा.....–

इससे तो साफ–साफ झलकता है कि उपन्यासकार ने पूरी–पूरी स्थिति को अपने उल्लास में समेट लिया है।

उपन्यासकार ने आज के समय में हो रहे क्लेष जो घर–घर, जाति–पाति और धर्मस्तर पर देखने को मिल रहा है, कैसे छोटे–छोटे नेता अपना रोटी सेकने के लिए किस हद तक लोगों को बाँटने का काम कर रहा है को सलाम और नईम के माध्यम से उकेड़ने का काम किया है–

''सलाम म्याँ, खैरियत तो है?'' बहुत दिनों बाद नजर आए साहब? ''नईम खुष हो गया। हाँ और सुनाओ। क्या हाल है?''

''हाल तो देख ही रहे हैं। देखिए, आपकी सेवा में यही आलू हैं।

एकाध कुन्तल कच्चे खाएँ तो खिलाएँ।'' ''बाकी भाई कहाँ है आजकल?'' 'एक तो मर गया, दो अपनी–अपनी दुकान देखते है।'' वे यहाँ क्यों नहीं बैठते?''
इस एक दुकान से क्या होगा?'' बड़ा परिवार है साहब। और वे भी अपनी ही दुकाने है। मेरे हिस्से यही आई।
''यार हरी सब्जियाँ बेचनी छोड़ दी तुमने, बड़ी उदास–सी लग रही है दुकान।
''साहब हरी सब्जियों के साथ एक दिक्कत थी। अगर उसी दिन नहीं बिकीं तो बासी हो जाती थीं और दूसरे दिन पड़ी–पड़ी खराब हो जाती थी। बासी कौन लेगा जब ताजी आँख के सामने हो। तो घाटा देने लगी थी।''
''ऐसा तो नहीं कि ग्राहक ही आने बन्द हो गए थे?''
नईम चौंका–''क्यों? ग्राहक क्यों बन्द हो जाएँगे?''
''क्या ठिकाना इस मुहल्ले का? राम जन्म भूमि और शिलापूजन का तमाषा देखा ही तुमने।''
''कैसी बात कर रहे हैं साहब?'' नईम हँसने लगा–पचास साल से यहाँ दुकान है यह ।हम सारे भाई यहीं पढ़े–आपके घर के सामने मुनिस्पैलिटि के स्कूल में रोज देखते ही थे आप। कोई ऐसा नहीं जो न जानता हो। आजतक न कभी चोरी हुई न लूट–पाट हुई। किसी ने गाली तक नहीं दी।''

''झूठ बोलते हो। जब भी दंगा होता है दुकान बन्द हो जाती है–देखते हैं।''
''किस नाजनी ने कर दिया तन पर मेरे पिशाब।
सारे बदन का कपडा यो हो गया खराब।''

उपन्यासकार ने अपनी तीसरी अध्याय का नाम 'सन्तो, असन्तो और घोंघावसन्तो का अस्सी' रखा है। नाम जैसा काम भी वैसाही रखा है। आजकल के समय में साधु–सन्त अपने इच्छा को पूर्ति करने के लिए कैसा–कैसा झूठ बोलता है को उल्लेखित करने का काम किया है।
पंडित जी पीछे हटते हुए– ''बालक बस चरण ही छूना आ–चरएा नहीं! वहाँ करंट है।'' बात तब मेरी समझ में आई जब बगल में खड़े दूसरे पंडित ने हँसते हुए कहा–''अब आचरण में कहाँ करंट? वह तो लत्ता हो चुका महाराज!''
जब आरक्षण लागू हुआ था तो एक पंडित जी पिछड़ो और हरिजन को 'पागलपन' के उत्तर में दिल खोलकर आशीर्वाद दिया करते थे–''जा अगले जन्म में बाभन–ठाकुर के घर में पैदा हो! ''उसके जाते ही भुनभुनाते थे–''भोसड़ी के जब नौकरी के लिए गिड़गिड़ाएगा और दर–दर की ठोकरें खाएगा, तब पता चलेगा।''
शब्दों में भाषा के विषय में रूसी त्रिक विस्तोर श्क्लोवस्की अपने लेख 'कथानक और शैली में लिखते है, ''भाषा मनुष्य पर अधिकार नहीं करती, बल्कि मनुष्य भाषा पर अधिकार करता है और उसके विभिन्न पहलुओं को इस्तेमाल में लाता है। वह सड़क पर एक ढ़ग से बोलता है और घर में दूसरे तरह ढ़ग से वह गाता एक ढ़ंग से है और सपने दूसरे ढ़ंग से देखता है। विक्तोर के इस कथन से आचार्य द्विवेदी और विक्तोर की बातों को मिलाकर विचार किया जाय तो काषीनाथ सिंह भाषा के मामले में डिक्टेटर ही कहे जाऐंगे। उनकी भाषा में एक गजब की मनचाही परिवर्तनषीलता है।

उपसंहार

काषीनाथ जी की भाषा में तल्खी और रवानी का राज यह है कि वे समाज में गहरे धँसते है। वे भाषा ग़ढ़ते नहीं जीवन से लेते है।

संदर्भ सूची

1. पृष्ठ संख्या–11– काषी का अस्सी
2. पृष्ठ संख्या–12– काषी का अस्सी
3. पृष्ठ संख्या–14– काषी का अस्सी
4. पृष्ठ संख्या–14– काषी का अस्सी
5. पृष्ठ संख्या–19– काषी का अस्सी
6. पृष्ठ संख्या–22– काषी का अस्सी
7. पृष्ठ संख्या–31– काषी का अस्सी
8. पृष्ठ संख्या–35– काषी का अस्सी
9. पृष्ठ संख्या–36– काषी का अस्सी
10. पृष्ठ संख्या–41– काषी का अस्सी
11. पृष्ठ संख्या–45– काषी का अस्सी
12. पृष्ठ संख्या–50– काषी का अस्सी
13. पृष्ठ संख्या–59– काषी का अस्सी
14. मेवाड़ी कमरो संबोधन त्रैमासिक पत्रिका ब्बज–श्रंद–2013 राजकमल प्रकाषन
15. काषी पर कहन–दूबे मणीषा